तृतीय अध्याय :

(इ) " पात्रों का चरित्र चित्रण "

भारतीय तथा पाश्चात्य आलोचक नाटक में कथावस्तु के बाद " पात्रों के चरित्र चित्रण को महत्व देते हैं। पात्र ही नाटकमें समा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर सकते हैं। पात्र से ही कथा वस्तु में सजीवता आती है। पात्रों से ही नाटककार अपना उद्देश्य स्पष्ट करता है। अत: नाट्य शिल्प में चरित्र चित्रण यह तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

पृथ्वीराज ऐतिहासिक नाटक है। ऐतिहासिक नाटक का आधार इतिहास की घटना होती है। अत: उसमें उतने ही पात्रों का चरित्र चित्रण आता है जितने उस घटना और प्रसंगों से संबंधित हों और जिनका उल्लेख इतिहास में मिलता हो। पृथ्वीराज नाटक राजस्थान के मेवाड राज्य मे संबंधित इतिहास पर आधारित है। इस घटना का कालखंड संवत १५३० के बाद का है। मेवाड के राजनीतिक परिस्थिति से संबंधित पात्र इस नाटकमें है।

" पृथ्वीराज " नाटक में करीबन् ३८ पात्र है। पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण सभी का चरित्र चित्रण स्पष्टता से नहीं मिलता। फिर भी इस नाटक में जो पात्र है. उनका महत्व देखकर तीन प्रकार से पात्रों का विभाजन किया जा सकता है। –

१) प्रमुख पात्र,
२) मध्यम श्रेणी के पात्र ,
३) सामान्य पात्र।

महाराणा रायमल , पृथ्वीराज, सुरताण, सूरजमल और सारंगदेव यह पुरुष पात्र तथा नारी पात्रों में तारा का चरित्र प्रमुख पात्रों में आता है।

संग्रामसिंह , जयमल, ओझा तथा करमचंद यह नाटकमें कथावस्तु के सहायक पात्र बने हुए है। इन चरित्रों का नाटकमें सम्पुर्ण परिचय नही मिलता है। अत: यह मध्यम श्रेणी के पात्र है।

इस नाटकमें एक दो समय पर और वह भी कम समय के लिए रंगमंच पर आये हुए पात्र ही अधिक संख्या में है। जिनमें कला, नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री (नारीपात्र) और मंत्री, सेनापती, प्रधान गुप्तचर, द्वारपाल, मारू, सेवक, दो पुरूष, युवक, छ. सैनिक, तीन दरबारी, तीन नागरिक , चर, दो प्रहरी, मीन नरेश आदि पुरूष पात्रों का परिचय नाटक में न के बराबर है। अत: यह सब सामान्य पात्र है।

उपर्युक्त पात्रों के विभाजन में सामान्य पात्र का परिचय न के बराबर ऐसा कहा है। इसलिए उन पात्रों का परिचय फिरसे न देकर इस अध्याय में केवल प्रमुख पात्रों का विस्तार के साथ और मध्यम श्रेणी के पात्रों का संक्षेप में परिचय दिया गया है।

१) <u>नाटक के प्रमुख पात्र</u> :

इसमें नायक, नायिका, खलनायक और उनके सहायक पात्रों का समावेश है। पृथ्वीराज इस नाटक का नायक है , तो तारा नायिका है। सूरजमल खलनायक है, तो सारंगदेव, महाराणा रायमल और सुरताण प्रमुख सहायक पात्र है। अत: इनका चरित्र चित्रण नाटक में किस तरह से हुआ है , यह देखना युक्तिसंगत है।

<u>पृथ्वीराज : नाटक का नायक</u> :

नाटय शास्त्र की दृष्टि से जो पात्र नाटक के अंतिम फल को प्राप्त करता है, उसे नायक कहा जाता है। तो दूसरे शब्दों में"कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी जिस पात्र के चित्त में अस्थिरता न आये वही नायक

हो सकता है। "[१]इस विवेचन के अनुसम पृथ्वीराज ही इस नाटक का नायक किस प्रकार से है यह देखना होगा। पृथ्वीराज धीरोदात्त कोटि का नायक है।

अपने विशिष्ट गुणों के कारण धीरोदात्त नायक को चारों प्रकार के नायकों में श्रेष्ठ माना जाता है। इस नायक की विशेषताए " साहित्यदर्पण " तथा " दशरूपक " में निम्न प्रकार से बताई है - विनयशील , महापराक्रमी, अत्यंत गम्भीर, क्षमावान, मधुरभाषी, दृढ, तेजस्वी, अदम्य साहसी, उत्साही, आत्मसम्मानी प्रज्ञाविद , कलाविद आदि।

पृथ्वीराज के चरित्रमें इन गुणों के दर्शन होते हैं। पृथ्वीराज के मन में चल रहे विचारों को लेकर नाटक की कथा में गति आ गयी है। " इस समय पृथ्वीराज के मस्तिष्क में मेवाड के उत्तराधिकार की समस्या चल रही है "[२] सूरजमल इसका संकेत देकर षड्यंत्र रचता है।

पृथ्वीराज शक्तिशाली और पराक्रमी युवक है। उसे अपने शक्तिपर भरोसा है। उसी के बलपर वह चारों ओर से संकट ग्रस्त मेवाड को मुक्त करना चाहता है। जयमल से उनका कहना - " जयमल तुम साथ नहीं दोगे तो भी मैं मेवाड का उत्तराधिकारी बनकर रहूँगा।"[३] आत्मविश्वास को स्पष्ट करता है।

पृथ्वीराज की वीरता सराहनीय है। इसलिए तो तारा अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति पृथ्वीराज ही कर सकेगा ऐसा मानती है , तो सुरताण उसे स्वीकार कर कहता है -" हा बेटी। पृथ्वीराज की सहायता से हम टोडा को वापिस ले सकते है। "[४] पृथ्वीराज का रोम रोम वीरता से भरा हुआ है। इसका परिचय नाटक के प्रारंभमे ही मिलता है। परम्परागत उत्तराधिकार के नियम को तोडने के लिए पृथ्वीराज तैयार होता है तो सूरजमल उसे समझाने का बहाना करता है, उस समय पृथ्वीराज का कहना -" मेरी तलवार का पानी उस आग को बुझा देगा , जिसमें मेवाड के भस्म होने की अशुभ संभावना छिपी हो।"[५]

---

१) हिन्दी नाटक मे पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण -डॉ. सूरजकांत शर्मा पृ.११
२) पृथ्वीराज , पृ. ६
३) वहीं , पृ. १७
४) वहीं पृ. ५२
५) वहीं पृ. १८

पृथ्वीराज अपनी वीरता के कारण ही देश का संकट दूर करना चाहता है। "इन भुजाओं में डुबते हुए मेवाड को बचा लेने की पर्याप्त शक्ति है। ---- मेवाड मेरा देश है। मेरे जीते जी उसका कोई कुछ नहीं बिगाड सकता।"[१] उनकी भुजाओं में सैकडों तलवारों का बल है। जिसके पास शक्ति होती है, उसीका शासन चलता है।

"आज तक इतिहास इस बात की साक्ष देता है कि, विजय उसी की हुई, जिसके पास शक्ति है, उसी की तूती बोलती है और उसी के बनाये नियम चलते हैं। वही विधान है और वही कानून है।"[२] इसके अनुरूप पृथ्वीराज परम्परागत नियम को तोडकर नया नियेम बनाना चाहता है। "जिसकी तलवार में शक्ति हो, वही सिंहासन पर बैठे।"[३]

संग्रामसिंह के साथ इसी प्रश्नपर पृथ्वीराज द्वंद युध्द करता है। सांगा उसका सामना न कर जान बचाने के लिए भागता है। लेकिन पृथ्वीराज को इस उदण्डता से मेवाड की सीमा से निर्वासित किया जाता है। मातृभूमि की रक्षा के लिए वह सब दण्ड सह लेता है। निर्वासित अवस्था में ही वह मीन नरेश की हत्या करके हमेशा के लिए गोद्वार को दस्युओं के आतंक से मुक्त करता है।

युध्द में सहायता करने वाले ओझा को गोद्वार प्रबंधक बनाना पृथ्वीराज की उदारता का परिचय देता है जिसे सूनकर महाराणा उनका दण्ड समाप्त करते है। राज्य लालसा की अपेक्षा पृथ्वीराज का राष्ट्रप्रेम महत्वपुर्ण है। मेवाड उन्हे प्राणों से प्यारा है। उसकी वीरता मेवाड की किर्ती में चार चांद लगा देती है।

---

१) पृथ्वीराज, पृ. १९
२) आधुनिकता और राष्ट्रीयता, पृ. ३५
३) पृथ्वीराज, पृ. १७

तारा की प्रतिज्ञा की पूर्ति भी वह करता है। राव सुरताण का टोडा प्रदेश लीला अफगान को पराजित करके मुक्त करता है। चितोड पर मालवा के मुजफ्फर की सेना सहायता से सुरजमल आक्रमण करता है, महाराणा रायमल स्वंय वीरता से लढकर भी शत्रु दल को पराजित नहीं कर सके। लेकिन पृथ्वीराजने देखते देखते ही शत्रु दल को काई की तरह फाड दिया।"[१] शरणार्थी सुरताण की मातृभूमि मुक्त करके पिता की लाज बचायी और अपना नाम पृथ्वीराज सार्थक किया।

पृथ्वीराजमें वीरता, साहस, स्पष्ठवादिता आदि गुण प्रचुरमात्रामें दिखाई देते है जो उनके व्यक्तित्व काही द्योतक है। मेवाड की स्वतंत्रता के लिए पृथ्वीराज का समर्पित जीवन सबके लिए प्रेरणादायी है। उनमें अतुलनीय राष्ट्रप्रेम, अदम्य वीरता, असामान्य साहस, राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर करने की तैयारी और प्रगल्भ व्यक्तित्व है। इस नाटक की समग्र कथा उनके इर्दगिर्द चक्कर काटती नजर आती है। अन्तमें मेवाड को निष्कंटक बनाकर, तारा की प्रतिज्ञा पूर्ण करके उसके साथ शादी करता है। अर्थात नाटक के अंतिम फल के भोक्ता वहीं है। नाटक का शिर्षक "पृथ्वीराज" उनके नामपर ही रखा गया है। अत: पृथ्वीराज ही इस नाटक का नायक है। वहीं नाटक में अत्यंत प्रभावशाली के रूपमें दिखाई देते हैं।

<u>तारा : नाटक की नायिका :</u>

इस नाटक में एकमात्र प्रमुख नारी पात्र है, वह टोंकटोडा के राव सुरताण की पुत्री तारा का। वह इस नाटक की नायिका है। नाटक में तारा के चरित्र चित्रण को नाटककारने नायिका के रूपमे चित्रित किया है। तारा का रूप सौन्दर्य अद्वितीय है। उसकी मधुर ध्वनि मनमोहक है। नाटक के प्रारंभ में तारा के आकर्षक व्यक्तिमत्व से तथा वीणा के मधुर स्वरों से सूरजमल उसके प्रति आकर्षित होता है। तारा सूरजमल का परिचय प्राप्त करने पर उसका अपमान करके चली जाती है। यहीं से नाटक में गति उत्पन्न होती है।

---

१) पृथ्वीराज, पृ. ९९.

तारा का सौन्दर्य मनमोहक है। वह तो विधाता की अन्यतम नारी रचना है। सूरजमल उसके रूप को देखकर उसे रूप का कोष. जंगल की मृगनयनी,[१] कहता है। सारंगदेव के पास तारा का परिचय देते समय वह कहता है - " सचमुच निराशा से भरे -हृदय के अन्धकार मे तारा की तरह चमक कर आशा की पौ फटते ही वह अचानक लुप्त हो गई। "[२] जयमल जब तारा का रूप देखता है तो अपने आपको कृतार्थ मानता है। तारा को वह अद्भुत सुन्दरी कहता है। पृथ्वीराज भी तारा को देखकर कहता है - " इस प्रभात वेला में धरती पर एक ही तो तारा है "।[३] ओझा के पास अंगूठी की कथा सुनकर ही पृथ्वीराज तारा के दर्शन के लिए आतुर हो गया था।

तारा वीणा वादिनी है। उसके वीणा के स्वरों से ही सूरजमल आकर्षित होता है। तारा के वीणा का प्रभाव केवल व्यक्ति पर ही नहीं तो प्रकृतिपर भी पडता है। कला इस संबंध मे कहती है - " आप जब वीणा बजाती है या गीत गाती है, तब हृदय मेरे वश में नही रहता। --- मै ही क्यों चारों ओर घूमकर देखो। ये लता- गुल्म, पेड- पौधे, वन के पक्षी, हिंस्त्र पशु सभी आपके स्वर पर मुग्ध हो रहे हैं। सूर्य की बाल - रश्मियाँ पर्वत की चोटी पर उतारती - उतरती स्वर से मुग्ध होकर वही रूकी रह गयी है।"[४] लेकिन तारा इस प्रभावशाली शक्ति को मन की पीडा मानती है। अपने गीत को -हृदय की वेदना कहती है। गीत की परिभाषा ही तारा के विचारों में व्यक्त हो गयी है -"-हृदय मे जब वेदना होती है तभी उससे मधुरतम संगीत फूटता है। कवि की पीडा को यह जगत् गीत समझता है। "[५]

---

१) पृथ्वीराज पृ. ५ :
२) वहीं , पृ. ६.
३) वही , पृ. ८८.
४) वहीं , पृ. ८५ .
५) वहीं , पृ. ८६.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

तारा के सौन्दर्य की अपेक्षा इस नाटक में उसका वीर रूप ही अधिक निखर उठा है। नाटक के प्रारंभ मे वह शास्त्राभ्यास करती नजर आती है। सूरजमल का निर्भीकता से वह विरोध करती है। उसका अपमान करती है। द्वंद्व युध्द करने के लिए भी तैयार होती है। राव सुरताण भी उसे पुत्र के समान मानते हैं। तारा जब शेर का शिकार करके उसके राव को पीठपर लादे आ. जाती है तो सुरताण आनंदित होकर-उसकी प्रशंसा करते हुए कहते हैं - "तारा ! ---- मेरी बहादुर पुत्री तारा ! --- तू मेरे वंश का गौरव है। --- मेरे जीवन के आकाश का ध्रुवतारा है। --- तेरे, साहस, पराक्रम और शौर्य ने मेरे हृदय को आनंद से भर दिया है।"[१]

तारा अपनी वीरता के बलपर टोडा को मुक्त करना चाहती है। जब जयमल राव सुरताण के पास तारा के साथ विवाह का प्रस्ताव रखता है, तो तारा मातृभुमि की रक्षा को महत्त्व देते हुए प्रतिज्ञा करती है -" जो वीर मेरे पिता के राज्य की सीमा से यवनों को निकाल देगा- टोडा का अपने बाहुबल से स्वतंत्र करा देगा। उसी से मैं अपना विवाह करूँगी। "[२] तारा का परिचय पाकर ही पृथ्वीराज के मनमें तारा का रूप बस जाता है। गोद्वार को मुक्त करके वह तारा के पास आता है। अपनी प्रतिज्ञा की पुर्ति पृथ्वीराज करेगा ऐसी आशा तारा को थी। दोनों एक दूसरे पर मुग्ध थे। पृथ्वीराज प्रेम का प्रतीक के रूप अगूठी तारा को पहना देना चाहता है, तो तारा उस समय भी प्रेम की अपेक्षा मातृभूमि की रक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहती है -" पृथ्वीराज ! ---- यह हृदय तुम्हारा है, पर उस पर अधिकार करने से पूर्व तुम्हें यहाँ भी एक परीक्षा देनी होगी। --- जब तक टोडा यवनों से मुक्त नहीं हो जाता तब तक ---- "[३] पृथ्वीराज के साथ वह भी युध्दभूमि में जाकर टोडा को मुक्त करने में सहायता करती है।

---

१) पृथ्वीराज पृ. २८.
२) वहीं , पृ. ३४.
३) वहीं , पृ. ९०.

टोडा को मुक्त करके वह चितोड के शत्रु को रास्ते मे रोककर अपमान का बदला लेती है। " सूरजमल तारा का एक वार न झेल सका, प्राण बचा कर भाग गया। ----"[१] महाराणा रायमल तारा को लक्ष्मी और दुर्गा का अवतार मानते हैं। उसकी प्रशंसा करते हुए राव सुरताण से महाराणा रायमल कहते हैं -" राव साहब। तुम्हारी वीर पुत्री के ही भाग्यसे आज मेवाड की रक्षा हुई है। मुझे उसकी वीरता पर उतना ही गर्व है , जितनी पृथ्वीराज की वीरता पर। "[२] इससे तारा की वीरता स्पष्टतासे दिखाई देती है।

इस नाटक में दो गीत तारा के गाये हुए है। जिसमे तारा के मानसिक स्थिति का चित्रण हुआ है। वह सरस्ती और दुर्गा का सम्मिलित वरदान है।

तारा के चरित्र का समग्र रूप हमें ओझा के कथन मे मिलता है। पृथ्वीराज को तारा का परिचय देते समय वह कहते हैं -" तारा ---- विधाता की सबसे सुन्दर रचना। ----रूप ---- शील ----- शक्ति ---- साहस ----- विवेक--- क्या नहीं है उसके पास।"[३] सचमुच तारा इन गुणों से भरी हुयी है। " समय की ठोकरों ने उसे धुल से भी अधिक तुच्छ बना दिया है "[४] लेकिन वह अपने साहस, देशप्रेम तथा वीरता के बलपर समय पर मात करके खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करती है। तारा का यह रूप उसे अपने आप ही नाटक की नायिका सिध्द करता है।

<u>सूरजमल : खलनायक :</u>

नाटक में नायक को छोडकर अन्य पुरुष पात्रों मे महत्वपुर्ण स्थान खलनायक या प्रतिनायक का होता है। " इसीके कारण नाटक मे सघर्ष एवं गति. शीलता के तत्व विशेष रूप से बने रहते है। गुणो में यह नायक के प्रतिकूल होता है। नायक के चरित्र में जितनी उदात्तता का निर्वाह

---

१) पृथ्वीराज , पृ. १०५ .
२) वहीं पृ. १०६.
३) वहीं पृ. ६९.
४) वहीं पृ. ६९.

अपेक्षित है, इसके चरित्र में उतनी ही अनुदात्तता का। नायक की लक्ष्य सिध्दि में बाधा उत्पन्न हो. इसके लिए हर सम्भव प्रयत्न करने वाले प्रतिनायक की चारित्रिक विशेषता के रूपमें हमारे समक्ष उसका लोभी व्यक्तित्व, घमण्डी स्वभाव, धारोध्दत प्रकृति , पापपूर्ण मस्तिष्क तथा व्यसनी अन्तःकरण उभर आता है। "[१]

उपर्युक्त विचारों के अनुरूप पृथ्वीराज नाटक में सूरजमल का चरित्र खलनायक का है। नाटक के प्रारंभ से लेकर अन्त तक उसके चरित्रमें एक भी अच्छे गुण का दर्शन नहीं होता। वह चरित्रहीन, षढयंत्रकारी, कुलद्रोही, देशद्रोही, अमानवीय कृत्य करता नजर आता है।

तारा के वीणा की मधुर झंकार सुनकर वह अरावली की उपत्यका में उसके पास जाता है। उसके रूप को देखकर मोहित होता है। अपनी भावना को व्यक्त करनेवाला उनका कथन -" तुम्हारे शौर्य और सौन्दर्य पर मै मुग्ध हूँ। .... तारा तुम्हारा परिचय मेरे उबलते हुए क्रोधपर शीतल जल सींकरो का काम कर रहा है। "[२] चरित्र हीनता का दर्शन देता है। उनके पिता उदयसिंह ने महाराणा कुम्भा की हत्या करके क्षत्रियत्वहीनता दिखाई थी। यह उसी क्षत्रियत्वहीन व्यक्ति की सन्तान है।

तारा के अपमान का बदला लेने के लिए ही वे उसकी प्राप्ति करना चाहता है और उसकी प्राप्ति के लिए खोई हुई सत्ता। जिसके लिए वह षड्यंत्र की रचना करता है। सच है"व्यक्तित्व की अप्रतिष्ठा और अस्तित्वहीनता की स्थिति मे व्यक्ति मूल्यहीनता की ओर भटकने लगता है। "[३]सूरजमल भी महाराणा रायमल के तीन पुत्रों मे उत्तराधिकार की आग भडका कर स्वंय महाराणा बनना चाहता है। इस कार्य में वह सारंगदेव को अपना साथी

---

१) हिन्दी नाटकमें पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण - पृ. २४
२) पृथ्वीराज, पृ. ५
३) बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक पृ.-१२९

बनाता है। सारंगदेव की सहायता को पाकर व्यर्थ का दंभ करता है:"हम दोनों मिलकर मेवाड की बडी से बडी शक्ति को झुका देंगे तारा को सूरज के गले मे वरमाला डालनी ही होगी।"[१]

षड्यंत्र की रचना करके सूरजमल पृथ्वीराज तथा जयमल के मनमें उत्तराधिकार की लालसा निर्माण करता है। सारंगदेव की सहायता से चारणीदेवी के मंदिर की सेविका को अपने पक्षमें कर लेता है। जब पृथ्वीराज और जयमल परम्परागत नियम को तोडने तैयार होते है, तो बनावटी क्रोध करके समझाना चाहता है। पृथ्वीराज सांगा के साथ द्वंद्व करने तैयार होने पर उन्हें अपने षढयंत्र की ओर ले जाता है। यह सब उनकी चालाक चाल तथा कपटी स्वभाव का परिचय ही है।

पृथ्वीराज के डर से सांगा भाग जानेपर महाराणा रायमल को पृथ्वीराज तथा जयमल की हत्या करनेवाले सुरताण के खिलाफ भडकाने का प्रयत्न करता है। पृथ्वीराज को मेवाड से निर्वासित करने की सलाह[२] उनकी ही है। वह पृथ्वीराज को देश से निकाल कर भी चूप नहीं बैठता तो गोढार के पर्वतीय क्षेत्र मे दस्यू के रूपमे उनपर हमला करता है।[३] जहाँ पृथ्वीराज की उदारता से बच जाता है। फिर भी वह अपनी सेना तैयार करके तथा मालवाधिपती मुज्जफर की सेना सहायता से मेवाड को हडपने का प्रयास करता है। इस कार्य मे वह जनता मे असंतोष फैलाना तथा मंडलाधिश और जागीरदारो को शासन के खिलाफ भडकाने का कार्य करता है। राव सुरताण को भी धमकिया देता है।

सूरजमल की असलियत का पता जब महाराणा को लग जाता है, तो वे उसे देशद्रोही, कुलद्रोही, पितृघाती पिता का पुत्र, घर का भेदिया मानकर जीवित या मृत पकडने का आदेश देते है।[४]

---

१) पृथ्वीराज, पृ. ७
२) पृथ्वीराज, पृ. ४६
३) वहीं, पृ. ५६-५७
४) वहीं, पृ. ७३.

अपने स्वार्थ और लालच के कारण विदेशी शासक को देशपर हमला करने के लिए बुलाने का देशद्रोह सूरजमल करता है। सादी ---- वाटुरों---- नाईं ---- और ---- नीमच ---- इनके मध्य का समस्त मेवाडी क्षेत्र ---- (अट्टहास) एक बहूत बडा परगणा ---- और अब इसका शासक है सूरजमल---- ह: ह: ह:। सूरजमल इस प्रदेश का महाराणा है ---- महाराणा।"[१] इसमे सूरजमल की प्रवृति दिखाई देती है। वह पेड पौधो और पर्वतो को अपनी जयजयकार करने को कहता है। सारंगदेव को वह अपना महामंत्री बनाना चाहता है।

पृथ्वीराज टोडा को जीत न सके इसलिए लीला अफगान को पहले ही युध्द की सूचना देता है। पृथ्वीराज टोडा के युध्द मे है तभी महाराणा रायमल को पराजित करना चाहता है। लेकिन पृथ्वीराज की वीरता के सामने न लीला अफगान टहरता है , न मुज्जफर की सेना। अपनी पराजय देख सूरजमल युध्द से भागता है। अपनी शक्ति और कपट करतूतों पर व्यर्थ घमंड करनेवाला सूरजमल अन्त में तारा के एक वार को झेल नहीं सकता।[२]

सूरजमल मेवाड के गौरव को मिट्टी मे मिलाने का तथा विदेशी शास्क को बुलाकर मेवाड मे जयजन्दी परम्परा चलाता है। " राजपूतों के इतिहास मे जयचन्द के साथ उसका भी नाम काले अक्षरो में लिखा जायगा।"[३] यह प्रहरी कथन सत्य लगता है। सूरज-मल जैसे व्यक्ति का नाम काले अक्षरों मे लिखा जा सकता है। एक खलनायक के स्पमे सूरजमल का चरित्र नाटककार ने सफलता से चित्रित किया है।

"महाराणा रायमल ":

पृथ्वीराज नाटक की कथा महाराणा रायमल के जीवन से संबंधित है। मेवाड के इतिहास मे महाराणा रायमल का स्थान एक विशेष स्प से है। मेवाड

---

१) पृथ्वीराज , पृ. ९३.
२) वहीं पृ. १०१
३) वहीं, पृ. ९७.

के इतिहास में महाराणा रायमल का स्थान एक विशेष रूप से है। मेवाड के महापराक्रमी महाराणा कुम्भा की हत्या करके उसका ज्येष्ठ पुत्र उदयसिंह महाराणा बनता है। पितृघाती उदयसिंह जनता की रक्षा नहीं करेगा, इसलिए सभी सरदार और जनता रायमल का साथ देती है, जो उदयसिंह का छोटा भाई था। रायमल सं. १५३० में उदयसिंह को हटाकर मेवाड के सिंहासन पर बैठते हैं।

रायमल के काल की राजनैतिक परिस्थितिपर ही यह नाटक लिखा है। प्रजा की सहायता से महाराणा बने रायमल अपने जीवन मे जनता की रक्षा के लिए कार्य करना चाहते हैं। वह युध्द विरोधी है। उनके राज्यमें नारी को श्रेष्ठ स्थान है। वे प्रजादक्ष न्यायप्रिय, नियतिवादी, परम्परावादी, आदर्शवादी, तथा वीर राजा है।

प्रजा की सुख सुविधा की ओर महाराणा का ध्यान अधिक है। अपने राज्यमे वह किसी भी प्रकार की अशान्ति न फैले इसलिए प्रजा के लिए समुचित जल और अन्न की सुविधा कर चुके है। बेघरबार लोगों को घर बनाकर दिय है। किसानों की उन्नति के लिए राजकोष से धन सहायता दी है। वे अपने आपको मेवाड की प्रजा की शान्ति और सुरक्षा का प्रहरी "[१] मानते है। गोढार की जनता को मीन दस्युवृत्ति के लाग लूट रहे है। वहाँ की जनता को मुक्ति दिलाना चाहते हैं। उनका कहना है - " वहाँ की प्रजा को इसप्रकार मीन दस्युओ के निर्णयपर नहीं छोडा जा सकता। "[२] इसमे महाराणा की प्रजाहितदक्ष वृत्ति दिखाई देती है।

महाराणा रायमल न्यायप्रिय व्यक्ति है। न्याय व्यवस्था मे अपना पराया यह भावना उनमे नहीं है। तारा जयमल के हत्या की सूचना महाराणा के पास सैनिक द्वारा भेजती है। जिसे सुनकर सेनापती और मंत्री भी क्रोधित हो जाते है लेकिन महाराणा अपने दु:ख को सहन कर कहते हैं ---- " जो

---

१) पृथ्वीराज, पृ. ११
२) वहीं, पृ. १३.

पुत्र सैन्य शक्ति या राज.कोष के बल पर किसी विपत्ति ग्रस्त व्यक्ति की कन्या के साथ अभद्र आचरण करने की धृष्टता करता है , उसको इसी प्रकार का दण्ड मिलना चाहिए। "[१] पुत्र की हत्या का दु:ख उन्हे नहीं। उन्हे तो नारी के सतीत्व की रक्षा महत्वपुर्ण है। उत्तराधिकार नियम को तोडने के जुल्म मे अपने ही पुत्र पृथ्वीराज को वे मेवाड से निर्वासित करते है। सारे कलह की जड सूरज-मल है , यह जानते ही उसे देशद्रोही ठहराकर जीवित या मृत पकडने का आदेश देते है। " उन्हे देश का गौरव पुत्रों से अधिक प्यारा है।"[२] पृथ्वीराज गोद्दार को मुक्त करता है , तो उनकी वीता तथा उदारता देश निर्वासन दण्ड समाप्त करते हैं।

महाराणा रायमल पुरूषार्थ की अपेक्षा नियति को महत्व देनेवाले नियति-वादी व्यक्ति है। दूसरे अंक के सप्तम दृश्य का उनका स्वगत कथन [३] नियतिपर विचार करनेवाला ही है। उनका विचार है कि राजा या रंक सभी पर नियति का शासन ही हमेशा चलता है। सभी अपनी शक्तिपर व्यर्थ ही गर्व करते है। उनका जीवन भी उसीप्रकार का है। महाराणा बननेपर अपने तीन पुत्रों पर उन्हे गर्व था लेकिन सूरजमल के षड्यंत्रसे सांगा भाग जाता है , जयमल की हत्या होती है, तो पृथ्वीराज को वे स्वंय ही देश से निकाल देते हैं।

महाराणा रायमल आदर्श विचारोंपर चलनेवाले आदर्शवादी है। प्रथम अंक के द्वितीय दृश्य में अपने स्वगत कथन[४]में महाराणा ने राजा और प्रजा के संबधमे आदर्श विचार व्यक्त किया है। जनता शांति और सूरक्षा के लिए राजा को अपना शासक मानती है। लेकिन शासक अधीश्वर बनकर शक्ति के गर्व मे अपनी इच्छाओं की पुर्ति करता है। जो सेवा नहीं कर सकता उसे राजा बनने का अधि-कार नहीं। राज्यसिंहासन विलास का स्थान नहीं है। शासक राज्यसिंहासन को विलास का स्थान मानता है जिससे युध्द तथा हत्याओं का जन्म होता है।

---

१) पृथ्वीराज , पृ. ४४
२) वही पृ. ४६
३) वही, पृ. ७१
४) वही , पृ. ९ - १२.

हर कोई अपने श्रम तथा भाग्य पर जीता है। राजाओं के आपसी लडाईमे जनता अकारण पिस जाती है। पारस्परिक सहयोग से युध्द बंद हो सकते हैं। प्रजा सुखी है तो बाहरी शक्ति देशमें अशांति नहीं फैला सकती। बाहरी शत्रु को समाप्त करने के लिए प्रजा की शक्ति को दृढ बनाना आवश्यक है। यह सब आदर्शवादी विचार नाटककार की कल्पना है, जो उन्होंने महाराणा रायमल को आदर्श-वादी राजा के रूपमे चित्रित करके किया है।

महाराणा रायमल परम्परागत नियमोंपर चलनेवाले व्यक्ति है। परम्परा-विरोधी प्रवृति उन्हें पसंद नहीं है। सच है, " समाज व्यक्ति अधिकारों को विरासती मान बैठा है। वह उसमें कोई दखल सहने को तैयार नहीं। फलत: पुराने और नये मुल्यों में टकराव अवश्यम्भावी हो गया। "[१] इसी विचार के अनुरूप महाराणा रायमल पृथ्वीराज के परम्पराविरोधी कृत्य को नहीं मानते और उसे मेवाड से निकाल देते हैं। इसमें रायमल का परम्परावादी रूप सामने आता है। तारा की सतचरित्रता पर खुश होकर वह बदनौर का जनपद उन्हें भेट देते है। "मेवाड सदा संकट-ग्रस्त वीरों को शरण देता रहा है। राणा रायमल ने उसी परम्परा को निभाया है। "[२] यह सुरताण का कथन उन्हे परम्परावादी सिध्द करता है।

महाराणा रायमल कलाप्रेमी, उदार, तथा वीर व्यक्ति थे। उनकी वीरता का परिचय नाटकके अन्त मे चितौड के अन्तिम निर्णायक युध्द में मिलता है। अत: समग्रत: से यही कहा जा सकता है, कि महाराणा रायमल के चरित्र को नाटककारने कल्पना के सहारे आदर्श बनाने का प्रयत्न किया है।

राव सुरताण :

पृथ्वीराज नाटक मे राव सुरताण की कथा अपने आपमे एक अलग स्थान रखती है। टोडा का राव सुरताण लीला अफगान से पराजित होकर मेवाड मे शरण

---

१) बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. १३३
२) पृथ्वीराज, पृ. ५२.

आया है। उनके मनमे अपार राष्ट्र प्रेम है। वह अपनी मातृभुमि को किसी भी प्रकार से मुक्त करना चाहता है। इसी लिए अपनी एकलौती पुत्री तारा को पुत्र के समान पढा लिखा कर बढाता है। उनकी यह आशा है कि एक दिन जरूर टोडा मुक्त होगा। इस नाटक में उनका यही रूप दिखाई देता है। वह भाग्य का मारा तथा आशावादी व्यक्ति है।

राव सुरताण भाग्य का मारा व्यक्ति है। भाग्य का साथ न मिलने से ही वह चालुक्य वंशीय सरदार जंगलमें भटक रहा है। वह महाराणा रायमल के यहाँ शरणार्थी बनकर जीवन बिता रहा है। लीला अफगान से पराजित होनेपर टोडा को अनेक बार मुक्त करने का प्रयास किया लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। वह जीवनमे उदास बन गया है। उसके मनमे एक ही चिंता है टोडा की मुक्ति। उनका यह कथन - " यह मेरी जन्मभूमि है। मेरे पितृव्योंकी गौरव-भूमि है। ---- मै उस पर अपना झण्डा फहरता हुआ देखना चाहता हूँ। "[१]

राव सुरताण बडे आशावादी है। लीला अफगान से बार बार पराजित होकर भी निराश नहीं होते। उनकी एक ही आशा है टोडा एक दिन मुक्त हो जाएगा। उसकी प्रतिक्षा में वे जी रहे हैं। आस्था से भरा उनका जीवन दूसरों को प्रेरणादायक ठहरता है। तारा इसे स्पष्टतासेव्यक्त करती है - " आप बडे आशावान है पिताजी। आप की आस्था मुझे नया जीवन देती है। "[२] तारा के जरिए अपनी आशा की पूर्ति करने की भावना उनमें है। जयमल के निराश मनमें आशा निर्माण करने का कार्य वे करते है - " तुम समझदार होते हुए भी क्षत्रियत्व से गिर रहे हो। ---- क्षत्रिय कभी निराशा की पूजा नहीं करता। तुम भी अपने बाहु-बल पर विश्वास कर, नए राज्य की स्थापना कर सकते हो। " [३]

सुरताण भले ही भाग्य का मारा हो, लेकिन उनमें साहस है। जयमल की अनैतिकता देखकर उसकी हत्या करना उनका साहस ही है ।

---

१) पृथ्वीराज , पृ. ३०
२) वहीं , पृ. ५३
३) वहीं , पृ. ३२

" सारंगदेव " :

महाराणा रायमल ने स्वर्गीय महाराण लाखा के वंशज राजपूत सारंगदेव को मैसारोड़गढ की छोटी सी जागीर दी है। जिससे वह असंतुष्ट है। वह बुध्दिमान होते हुए भी केवल असंतुष्टता के कारण सूरजमल के षडयंत्र में सहायक बनता है। स्वार्थ के कारण अनीति को अपनाता है। उनके मनमे महामंत्री बनने की ईच्छा है और उसी की पूर्ति में वह अपने कुलपर कलंक लगाने का कार्य करता है। देशद्रोह करता है।

सूरजमल के षड्यंत्र को सफल बनाने मे सारंगदेव की बुध्दिमता महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। वह कार्य की सफलता को महत्त्व देता है। " केवल वैमनस्य करा देने से काम नहीं चलेगा सूरजमल। शक्ति का संचय भी आवश्यक है। "[१] वह सूरजमल का साथ जीवनभर निभाने का वचन देता है लेकिन उसके बदले में महामंत्रि पद की अभिलाषा रखता है। अपनी स्थितिपर वह असंतुष्ट है और उसमें परिवर्तन लाने के लिए कुमार्ग अपनाता है।

विदेशी शासक मुजफ्फर की सेना सहायता से अपने देशपर आग्रमण करने की योजना बनाता है। महाराणा के पास पृथ्वीराज और सांगा के द्वंद को बताकर पृथ्वीराज को दण्ड दिलाने की सूरजमल की योजना असलमें सारंगदेव की ही है। यहा सारंगदेव स्वंय भी एक षढयंत्रकारी व्यक्ति दिखाई देता है।

सारंगदेव बूरे कृत्य करते समय भी चतूरता से कार्य लेता है। मालवाधिपति मुजफ्फर की सेना सहायता मिलनेपर युध्दमे यवन सेना को आगे भेजता है और अपनी सेना पीछे रखता है। इसका कारण बताते हुए, वह कहता है -- " इस बार रायमल स्वंय युध्द में कूदने की तैयारी कर रहे हैं। ----- उनके नेतृत्व में आने वाली राजपूत सेना के वार झेलना आसान काम नहीं। ---- यदि मुजफ्फर की सेना ने धोरवा दिया और हमने उन्हें वापिस भाग जाने दिया तो हम

---

१) पृथ्वीराज - पृ. ७

लोग बेमौत मारे जाएँगें। "[१] सूरजमल उनकी बुध्दिमानी की सराहना करता है।

सारंगदेव का चरित्र खलनायक सूरजमल को सहायता करनेवाले प्रमुख पात्र के रूपमें है। खलनायक के सभी कार्यों में सारंगदेव ने अच्छा साथ दिया है। उनके मनमे महामंत्री बनने की जो लालसा है, सचमुच उनका व्यक्तित्व महामंत्री बनने योग्य है।

२) <u>नाटक के मध्यम श्रेणी के पात्र</u> :

संग्रामसिंह, जयमल, ओझा और करमचंद इन पात्रों का परिचय नाटकमे संक्षेपमें मिलता है। यह पात्र कथावस्तु में सहायक बने हुए है।

<u>संग्रामसिंह</u> :

महाराणा रायमल का ज्येष्ठ पुत्र संग्रामसिंह जो कि इतिहास में राणा सांगा के रूप में मशहूर है, इस नाटक मे एक सामान्य व्यक्ति के समान दिखाई देता है। जो नीति और भाग्य पर विश्वास करके अपने आप उत्तराधिकारी होना चाहता है। राणाकुमार बनकर देश के संकट को दूर करने की शक्ति उनमें नहीं है। सूरजमल के षढयंत्र का शिकार वही बनता है। पृथ्वीराज के साथ हुए द्वंद्व युध्दमे एक आंख फूटते ही भाग जाता है। शिवान्तिनगर का विदा राजपूत उनकी रक्षा करते मारा जाता है लेकिन उस समय भी अवसर मिलते ही वहाँ से सांगा भाग जाता है। अत: इससे उनमे पलायनवादी वृत्ति दिखाई देती है।

मेवाड से भाग जानेपर संग्रामसिंह को अपनी गलतीपर पश्चाताप होता है। जिसे वह करमचंद के पास व्यक्त करता है -- " मै ही हूँ महाराणा रायमल का अभागा पुत्र सांगा, जिसने विवेक हीन होकर अपने कनिष्ट भाई को रूठ किया और मेवाड को भंयकर विद्वेष की आग में झोक दिया। "[२] जिसके लिए वह अपने को अपराधी मानकर डाकू के वेश में जीवन बिताता है। अपनी असलियत छुपाने का प्रयत्न करता है, लेकिन मारू के शकुन ज्ञान से जब सत्य सामने आता

---

१) पृथ्वीराज, पृष्ट ९४
२) वही. पृ. ६५

है, तब मेवाड न जाने का कारण बताते वह कहता है -- "मैं आत्म ग्लानि की आग में जल रहा हूँ। जब तक वह आग शान्त नहीं होगी, तब तक मै मेवाड नहीं जाऊँगा।"[१] इसमें उनका बडप्पन व्यक्त हुआ है। जिसे देखकर करमचन्द उन्हे जंगल का राजा घोषित करते हैं और अपनी बेटी की शादी उनके साथ करते हैं।

सांगा के चरित्र को देखकर नाटककारने उसके प्रति अन्याय किया है, ऐसा लगता है। क्योंकि इतिहासप्रसिध्द पराक्रमी, वीर, साहसी, राष्ट्रप्रेमी सांगा को यहाँ प्राण बचाने के लिये भागते दिखाया है। लेकिन नाटक की कथा पृथ्वीराज के चरित्र को स्पष्ठ करना तथा रायमल के राजनैतिक संकट का निवारण, इसे लेकर लिखा गया है। इसलिए सांगा का यह चरित्र उचित ही लगता है।

<u>जयमल</u> :

महाराणा की कनिष्ठ संतान जयमल सांगा और पृथ्वीराज का सौतेला भाई है। महाराणा ने उनकी उपेक्षा की है। वह परम्पराविरोधी वृत्ति का कार्य करता है। उत्तराधिकार के नियम को तोडने के लिए पृथ्वीराज का साथ देता है। सांगा की हत्या करने के लिए शान्तिनगर तक उसका पीछा करता है। जब वीदा राजपूत बीच मे आता, तो उसकी हत्या कर देता है।

सांगा की हत्या करने उसका पीछा करनेवाला जयमल वापस नहीं आता। सांगा का वध करने में असमर्थ हों, वह तारा के यौवन राज्य पर आक्रमण करने चला।"[२] राव सुरताण के पास जाकर तारा के साथ विवाह का प्रस्ताव रखता है तारा उसके लिए प्रतिज्ञा करती है। उस प्रतिज्ञा को पूरा करने का आश्वासन देता है लेकिन "वह तारा को टोडा मुक्त कराने से पहले ही अपनी प्रियतमा समझ बैठा।"[३] राव सुरताण इससे क्रोधित होकर उनकी हत्या करते है। तारा उनके

---

१) पृथ्वीराज , पृ. ६५
२) वहीं , पृ. ३६
३) वहीं, पृ. ३७

व्यक्तिमत्व को नपुंसक कहती है -- " जयमल अपनी नपुंसकता का फल चख गया। "[१]

जयमल निराश और चरित्रहीन व्यक्ति के रूपमें ही हमारे सामने आता है। उनकी इस स्थिति का कारण यहीं हो सकता है -- " किसी उदात्त लक्ष्य से च्युत होकर उसकी अप्राप्ति मे ही व्यक्तित्व के विखंडन की शुरुआत होती है। ऐसी स्थिति मे ही अनास्था उपजती है। संशय, कुण्ठा, अनिश्चय एवं संत्रास इसी स्थिति के परिणाम है और यही स्थिति व्यक्ति को मर्यादाहीन बनाती है। "[२] जयमल का मर्यादाहीन आचरण इसीका परिणाम है ।

ओझा :

ओझा पृथ्वीराज का सहायक व्यक्ति है। महाराणा रायमल जब उन्हे मेवाड से निर्वासित करते है , तो वे गोढ्वार में जरकी उसकी मुक्ति की योजना करते है , जिसकी सहायता से वे गोढ्वार को मुक्त करते है , वह व्यक्ति नादौल का व्यापारी ओझा ही है।

ओझा तन मन धन से पृथ्वीराज की सहायता करता है। पृथ्वीराज का सबसे विश्वास पात्र सहायक ओझा ही है। पृथ्वीराज के मनमे तारा के प्रति आकर्षण निर्माण होने का निमित्त भी ओझा ही है। ओझा द्वारा बतायी तारा के अंगूठी की कथा पृथ्वीराज के मानसपटलपर तारा का चित्र अंकित करता है।

ओझा जैसा मित्र पाकर पृथ्वीराज अपने आपको कृतार्थ समझता है। इसलिए मीन नरेश की हत्या करके गोढ्वार को मुक्त करनेपर पृथ्वीराज " ओझा व्यापारी को गोढ्वार का प्रबंध सौपकर उसे महाराणा के राज्य का ही एक परगना घोषित किया। "[३] ओझाने बिना किसी इंच्छा से पृथ्वीराज को संकट कालमे हर प्रकार की सहायता देने का कार्य किया है। वह पृथ्वीराज का अत्यंत प्रिय मित्र रहा है।

---

१) पृथ्वीराज पृ. ५०
२) बदलते मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. १२९
३) पृथ्वीराज , पृ. ८२.

" करमचन्द " :

पृथ्वीराज के साथ द्वंद्व युध्द करके जान बचाने के लिए भागे हुए सांगा की सहायता करने में महत्वपुर्ण कार्य करमचन्द ने किया है। यह श्रीनगर का राव है। दस्यू दल का नेता है।सांगा भी डामू के वेशमें उन्हीं के दल मे कार्य करता है।

सांगा की असलियत उन्हें तब मालूम होती है , जब मारू शकून का अर्थ बताता है। डाकू वेश मे पडके निचे सांगा सोया हुआ था , काला सर्प फणा निकालपर उनके माथेपर खडा था और पेडपर देवी पंछी की आवाज। इसका अर्थ " यह युवक कोई राजकुमार है और जल्दी ही यह कहीं का तेजस्वी राजा बनेगा। "[१] इसपर करमचन्द सांगा का परिचय पाना चाहता है प्रारंभ मे सांगा छिपाने की कोशिश करता है , पर बादमे बता देता है।

सांगा का परिचय पाकर करमचंद अपनी बेटी का विवाह उनके साथ करने को तैयार होते है। इसप्रकार राणाकुमार सांगा को दुर्दिन मे सहायता करने मे करमचंद का कार्य महत्वपूर्ण है।

३) सामान्य पात्र :

पृथ्वीराज नाटक मे सामान्य पात्रो की संख्या अधिक है , और चरित्र चित्रण की दृष्टि से वह सब पात्र न के बराबर है। केवल ऐतिहासिक नाटक होने के कारण उनका नाटक में होना यथार्थ लगता है। फिर भी कथावस्तु को आगे बढाने में, प्रमुख पात्रो के चरित्र चित्रण मे, उद्देश्य की सफलता स्पष्ठ करने और सूच्य कथा बताने में इन का कार्य सफल रहा है।

निष्कर्ष :

पृथ्वीराज ऐतिहासिक नाटक है। इसके सभी पात्र ऐतिहासिक है।

---

१) पृथ्वीराज , पृ. ६२

पृथ्वीराज वीर, साहसी और राष्ट्रभक्त है , महाराणा रायमल आदर्श राजा है , तारा लक्ष्मी और दुर्गा का अवतार है , सूरजमल तथा सारंगदेव कुलद्रोही और देशद्रोही है , ओझा और करमचंद सहायक तो सुरताण आशावादी-व्यक्ति है। अत: नाटक के सभी पात्रों का महत्त्व कथावस्तु को उद्देश्य की ओर ले जाने मे है। नाटय शिल्प की दुष्टिसेपात्रों का चरित्र चित्रण सफल हुआ है। जिसे देखकर नाटक चरित्र प्रधान तो नहीं है ऐसा अभास होता है, लेकिन नाटक का उद्देश्य पात्रों के जरिए ही सफल हुआ है।

.....